आर्थिक व्यवस्था — संपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों पर राज्य का नियंत्रण

(1) अर्थव्यवस्था वार्ता पर आधारित

(2) आदेव मातृक भूमि की इच्छा जिसमें बिना वर्षा के भी अच्छी खेती हो सके।

(3) मेगस्थनीज के अनुसार यहां वर्ष में दो बार वर्षा होती है और दो बार फसल काटे जाते हैं। मिट्टी में सीलन रहती है जो इसे उपजाऊ बनाए रखती है।

(4) शूद्रों और क्षेत्रियों के माध्यम से कृषि भूमि का विस्तार और उन्हें बसने और कृषि के लिए प्रोत्साहन

(5) भूमि —
- राजकीय - दासों, कर्मकारों और बंदियों द्वारा जुताई और इन्हें नकद मासिक वेतन दिया जाता था।
- निजी - गृहपतियों या कृषकों के अधीन थी उपज का 1/6 भाग राजा को देते थे। करारोपण

भूमि से होने वाली आय को कौटिल्य ने 'सीता' कहा है।

व्यक्तिगत कृषक की भूमि के आधार पर होता था संपूर्ण गांव के आधार पर नहीं साथ ही साथ भूमि की गुणवत्ता का भी ध्यान रखा जाता था।

कृषि विभाग का अध्यक्ष - सीताध्यक्ष

समाहर्ता - कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी

संनिधाता - कोषाध्यक्ष

(6) सिंचाई का प्रबंध जिसे सेतुबंध कहा गया है। इसके अंतर्गत तालाब या झील पर बांध बनाकर पानी एकत्रित किया जाता था। मौर्य के समय सौराष्ट्र में सुदर्शन झील पर बांध का निर्माण। सिंचाई कर — उपज का 1/5 से 1/3 भाग

(7) जुआघर, मद्यपान की दुकान और वेश्याघरों से भी कर की वसूली
अर्थशास्त्र में करों की लंबी सूची है।

(8) अर्थशास्त्र में दुर्भिक्ष का वर्णन और इस समय जनता की भलाई के लिए उपाय

(9) वन प्रदेश एवं चारागाह — राज्य का अधिकार
खान, मदिरा की बिक्री, हथियारों का निर्माण आदि पर राज्य का एकाधिकार

- हस्तिवन (हाथी) → युद्ध के लिए
- द्रव्यवन — लकड़ी और लोहा, तांबा जैसी धातुएं → कारखानों में उपयोगी वस्तुओं तथा अस्त्र-शस्त्र का निर्माण

कारखानों में बनी वस्तुएं बाजारों में बेची जाती थीं — पण्याध्यक्ष का नियंत्रण

(10) शिल्पों को प्रोत्साहन —
- राज्य के अधीन शिल्पी - वेतन पाते थे
- स्वतंत्र शिल्पी - "श्रेणियों" में संगठित

(i) मेलजोल - चला और प्रतियोगिता का व्यय बच जाता था
(ii) स्थानीयकरण और वंशगत प्रवृत्ति शक्तिशाली बनाया।

↓ जीवन व संपत्ति सुरक्षा के संदर्भ में राज्य की व्यवस्था

(11) उद्योग — (i) प्रधान उद्योग सूत कातना और बुनना
अर्थशास्त्र के अनुसार काशी, वंग, पुण्ड्र, कलिंग, मालवा सूती वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे।
(वंग ↓ मलमल के लिए)

(ii) खनन उद्योग — (a) धातु को खोजना, निकालना, गलाना, लचीला बनाना, शुद्ध करना जैसी तकनीकी जानकारी
(b) लोहाध्यक्ष - इसके निरीक्षण में युद्ध के हथियार और कृषि उपकरण का निर्माण
(c) सुवर्णाध्यक्ष - सोना और चांदी के आभूषणों का निर्माण इनके नियंत्रण में
(d) लक्षणाध्यक्ष - सिक्के का निर्माण इनके निरीक्षण में

(iii) अन्य उद्योग — हाथी दांत से संबंधित; कुम्हार; चर्मकार; पत्थर तराशने का व्यवसाय
(कुम्हार ↓ काली चमकदार मिट्टी के बर्तन)
(पत्थर तराशने ↳ सारनाथ सिंह स्तंभ)

(12.) <u>व्यापार</u> :- वृद्धि के कारण – [बड़ा साम्राज्य
प्रशासनिक एवं सैन्य आवश्यकता

(ii) मार्ग – (a) पाटलिपुत्र से नदी मार्ग के द्वारा यातायात और व्यापार की संभावना
(b) पाटलिपुत्र से एक मार्ग वैशाली और चंपारण होते हुए नेपाल तक
(c) हिमालय की तराई में सड़क — चंपारण, कपिलवस्तु, कलसी, हजारा होते हुए पेशावर तक
(d) मेगस्थनीज के अनुसार एक सड़क पश्चिमोत्तर भारत को पटना से जोड़ती थी।
(e) उ०प० भाग, द० भाग, प० भाग और पूर्वी (कलिंग) भाग पर विजय से उ०प०, द०, पूर्व और द०पू० व्यापार-मार्ग नियंत्रित हो गया।
(f) कौटिल्य ने हिमालय की ओर जाने वाले मार्ग की तुलना में द० मार्ग को अधिक लाभदायक बताया है क्योंकि द० से बहुमूल्य (हीरा, सोना, शंख, मणि आदि) व्यापार होते थे। इसके अलावा स्थल मार्ग की तुलना में नदी मार्ग ज्यादा उपयुक्त → चोरों और जंगली जानवरों का भय नहीं।
(g) यूनान और मिस्र तक व्यापार। स्थल मार्ग - तक्षशिला, काबुल, बैक्ट्रिया होते हुए पश्चिमी देशों तक

(iii) बंदरगाह — प० तट पर सोपारा, पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति
रोमिला थापर — कलिंग विजय का कारण व्यापार की दृष्टि से कलिंग का महत्व था।

(iv) निर्यात - म० सूती वस्त्र, हाथीदांत, कछुए, सीपियाँ, मोती, रंग, नील, बहुमूल्य लकड़ी

(v) शिल्पी एवं व्यापारी — (a) प्रजा के हित के लिए व्यापार नियंत्रण। राज्य निर्मित वस्तुओं पर उत्पादन की तिथि अंकित की जाती थी ताकि नए और पुराने की पहचान हो सके।
(b) संस्थाध्यक्ष - इसकी अनुमति के बिना पुराना माल न तो बेचा जा सकता था और न ही गिरवी रखा जा सकता था।
(c) माप और तौल का प्रति चौथे महीने निरीक्षण।
(d) बिक्री कर — मेगस्थनीज के अनुसार इसका कर न देने पर मृत्यु दंड

(vi) बैंकिंग प्रणाली का अभाव — हालांकि रुपया ब्याज पर देने की प्रथा

(13.) <u>मुद्रा</u> – (i) आहत रजत मुद्राएँ मौर्य साम्राज्य की मान्य मुद्रा
(ii) अत्यधिक मात्रा में मिली हैं।
(iii) कर वसूली और अधिकारियों के वेतन भुगतान
(iv) शुद्ध समरूपता के कारण बाजार के लेन-देन में प्रयोग।
[illegible] अथवा मुद्रांकी या [illegible] से दंड प्रथा का आभास हो